



बढ़ते कदम

वर्ष-17
अंक-04
2017-18

पूर्व रेलवे, मालदा मंडल की सृजनात्मक हिन्दी ई-मासिकी



भारत के संविधान में राजभाषा

राजभाषा पुरस्कार योजनाएं

1. लाल बहादुर शास्त्री तकनीकी मौलिक लेखन पुरस्कार योजना

इस योजना में रेलों से इतर व्यक्ति भी शामिल हो सकते हैं।

इस योजना के तहत तीन पुरस्कार

प्रथम - 15000/- 1,

द्वितीय - 7000/- 1

तृतीय - 3300/- 1

रेल कर्मियों की साहित्यिक प्रतिभा को बढ़ावा देने तथा तकनीकी रेल विषयों पर अधिकाधिक पुस्तकें उपलब्ध करवाने के उद्देश्य से यह योजना लागू है।

2. मौथिली शरण गुप्त पुरस्कार योजना

(काव्य संग्रह के लिये) तीन पुरस्कार

प्रथम - 15000/- 1,

द्वितीय - 7000/- 1

तृतीय - 3300/- 1

3. प्रेमचंद पुरस्कार योजना

(कहानी संग्रह/ उपन्यास के लिये) तीन पुरस्कार

प्रथम - 15000/- 1

द्वितीय - 7000/- 1

तृतीय - 3300/- 1

4. इंदिरा गांधी राजभाषा पुरस्कार योजना

हिंदी में मौलिक पुस्तक लेखन के लिये

प्रथम पुरस्कार – 60,000/- 1

द्वितीय पुरस्कार – 45,000/- 1

तृतीय पुरस्कार – 30,000/- 1

प्रोत्साहन पुरस्कार-15,000/-

विषय वस्तु

प्रसंगवश—

—सुधांशु कुमार विश्वास — 3

मां की ममता —

— विनोद कुमार त्रिपाठी 4

गुणाकर मुले

— सुप्रिया राय 8

एल टी ई तकनीक—

— विकास कुमार 10

भगवान रजनीश ...—

— रितेश कुमार सिंह 12

मोर और मोर पंख

— इंद्र ज्योति राय 15

शतावरी —

— नितेश कुमार 16

वृक्ष एवं पानी

— शैल बाला 17

लघुकथाएं

— मान सिंह माडी 18

चित्र विथिका

19-20

प्रकाशित रचनाओं में व्यक्त विचार लेखकों के अपने हैं
इससे संपादक मंडल का सहमत होना आवश्यक नहीं है।

संपर्क सूत्र

संपादक, बढ़ते कदम

मंडल रेल प्रबंधक कार्यालय

पूर्व रेलवे/मालदा

फोन- 72190/ 72192 (रेलवे)

Email - rajbhasha.malda@gmail.com

विश्व जनसंख्या दिवस

विश्व जनसंख्या दिवस एक महान कार्यक्रम है जो कि 11 जुलाई को दुनिया भर में मनाया जाता है। यह दुनिया भर में जनसंख्या या बढ़ते आबादी के मुद्दों पर लोगों के प्रति जागरूकता बढ़ाने के लिए मनाया जाता है।

विश्व जनसंख्या दिवस एक अंतरराष्ट्रीय स्तर पर जागरूकता अभियान है, जिसमें पूरा विश्व शामिल हो जाता है। हर साल इस मंच से जनसंख्या वृद्धि के कारण बताए जाते हैं, जिससे पूरे मानव समुदाय के साथ मिल कर इस समस्या को हल किया जा सके।

यह जागरूकता कार्यक्रम पूरे विश्व में चलाया जा रहा है ताकि विश्व स्तर पर आबादी को न्यूनतम रखने की क्रांति लाई जा सके, साथ ही साथ गहरी नींद में सोये लोगों की नींद तोड़ी जा सके ताकि वो अपना ध्यान केन्द्रित कर सकें और जनसंख्या वृद्धि के मुद्दे पर सकारात्मक पहल कर सकें।

यह कार्यक्रम संयुक्त राष्ट्र विकास कार्यक्रम द्वारा पहली बार 1989 में शुरू हुआ था जब विश्व की आबादी करीब पांच अरब के करीब आ गई थी। वर्ष 1987 में 11 जुलाई को जनता के हित के लिए इस दिन की शुरुआत की गयी। विश्व के विकास के लिए यह बड़ी चुनौती थी, जब पृथ्वी की आबादी वर्ष 2011 में 7 बिलियन के पास पहुंच गई। संयुक्त राष्ट्र के फैसले के अनुसार, वर्ष 1989 में यह तय किया गया कि हर साल 11 जुलाई विश्व जनसंख्या दिवस के रूप में मनाया जायेगा, ताकि आम जनता में जागरूकता को बढ़ाया जा सके और आबादी के मुद्दों से निपटने के लिए वास्तविक समाधानों का पता लगाया जा सके।

विश्व जनसंख्या दिवस अभियान हर साल दुनिया भर के लोगों में प्रजनन स्वास्थ्य और परिवार नियोजन के ज्ञान को बढ़ा रहा है। हर वर्ष करीब 1.8 अरब युवा अपने प्रजनन के वर्षों में प्रवेश कर रहे हैं और इसके लिए प्रजनन स्वास्थ्य के प्राथमिक भाग की ओर उनका ध्यान आकर्षित करना बहुत आवश्यक है। आंकड़ों के अनुसार, 1 जनवरी 2017 विश्व की जनसंख्या लगभग 8 अरब तक पहुंच गई है। बढ़ती जनसंख्या से उत्पन्न होने वाले खतरों की वास्तविकता के बारे में लोगों को जागरूक बनाने के लिए विश्व जनसंख्या दिवस का वार्षिक उत्सव मनाया जाता है।

सुधांशु कुमार विश्वास

निःशुल्क वितरण हेतु

संरक्षक

मोहित सिन्हा
मंडल रेल प्रबंधक

परामर्श

विजय कुमार साहू
अपर मुख्य राजभाषा अधिकारी
एवं अपर मंडल रेल प्रबंधक

प्रधान संपादक

सुधांशु कुमार विश्वास
राजभाषा अधिकारी(प्रा.)

संपादक

सच्चिदानंद
व. अनुवादक

कार्यकारी संपादक

कैलाश चंद्र धारिया
व. अनुवादक

सहयोग

इंद्र ज्योति राय
क. अनुवादक

मां की ममता

महेश लाल गांव के बड़े सम्मानित आदमी थे। लोग उन्हें देवपुरुष की भांति सम्मान दिया करते थे। कहने के लिए तो उनके पास बाप-दादा की काफी जमीन थी। हवेलीनुमा एक बड़ा घर भी विरासत में मिला था। पर उनकी आदतों के कारण सब कुछ धीरे-धीरे गिरवी पड़ता जा रहा था।

उर्मिला भी कुछ कम बड़े खानदान से नहीं आई थी। उसके बाप भी जमींदार थे। कई-कई नौकर चाकर उसकी सेवाओं में लगे रहते थे। ससुराल में भी किसी चीज की कोई कमी नहीं थी। पर उसका स्वभाव अपनी सास की तरह घर संजोने वाला नहीं था। उसका मानना था कि जवानी दुबारा नहीं मिलती। अतः इसको भरपूर ढंग से जीना चाहिए। वह अपने जीने के ढंग को किसी भी कीमत पर बदलना नहीं चाहती थी। यदाकदा उसकी बात जब पति महेश लाल से होती तो वह अपने तर्कों से सहज ही उनका मुंह बंद कर देती।

महेश लाल अपनी बीवी और मां सुनयना देवी के बीच ताल-मेल बिठाने में असफल रहे। नतीजा यह था कि अक्सर सास-बहू में घमासान छिड़ जाया करता था। घर के तीन प्राणियों में भी शांति नहीं थी। मां तो मां ही होती है। वह अपने बेटे की मजबूरी समझती थीं पर करे भी तो करे क्या- यह बात उसकी समझ में नहीं आती थी। बेटा कभी-कभी मां और पत्नी की तकरार से दुखी हो कर कई-कई दिन तक खाना नहीं खाता था।

मां से बेटे का यह दुख सहा नहीं जाता था। काफी सोच-समझकर उन्होंने निर्णय कर लिया कि वह वृंदावन जाकर रहेंगी। बहू को अपनी मनमानी करने में भी कोई दिक्कत नहीं होगी। महेश पहले तो इस बात के लिए तैयार नहीं हो रहा था।

वह पत्नी के पक्ष में फैसला लेने की बाबत मां के वृंदावन जाने की बात पर विचार करने लगा।

उर्मिला ने दो टूक कह दिया था-“यदि तुम उसके साथ रहना चाहते हो तो रहो, मैं तुम्हारे साथ नहीं रह सकती।”

मां के वृंदावन जाने की तैयारी पूरी हो गई। सुनयना देवी भरे मन से अपने तिनका-तिनका जोड़ कर बनाए घर को आंख भर देख लेना चाहती थीं। तभी उर्मिला की आवाज सुनाई पड़ी-“मांजी, गाड़ी के आने का समय हो रहा है। जल्दी कीजिए नहीं तो...”

बहू के चेहरे पर एक विजयी मुस्कान तैर रही थी। सुनयना देवी ने कुछ जवाब तो नहीं दिया पर उनकी आंखों से आंसुओं की कई बूंदें निकल पड़ीं। बेटे ने लक्ष्य तो किया पर वह दुविधा में फंसा चुप ही रह गया। मां के जाने बाद से उर्मिला पूरी तरह स्वतंत्र हो गई। पति पहले से ही उसके वश में था। अब उसे किस बात की कमी थी जो वह न करती। बेटे के मन से भी मां की यादों के फूल सूखने लगे थे।

पहले जब सुनयना देवी थीं तो घर में कोई सामान खरीदने के पहले उनकी भी राय ली जाती थी। लेकिन अब ऐसी बात नहीं थी। उर्मिला ने विचार रखा नहीं कि महेश बाबू उसे पूरा करने की दिशा में तत्पर हो जाते।

ऐसा करने से थोड़े ही दिनों में घर की स्थिति चरमराने लगी। महेश बाबू ने वकालत पढ़ी जरूर थी पर किसी कचहरी में नहीं बैठते थे। बाप-दादा द्वारा अर्जित धन-संपत्ति ही काफी पड़ती थी। फिर भी उर्मिला की रोज-रोज की फरमाइशों को पूरा कर पाना संभव नहीं हो पाता था। इसलिए दूसरों से उधार लेना शुरू हो गया।

रतनपुरा में ही महेश लाल के दोस्त गिरधारी लाल रहते थे। उनका लाखों का व्यापार था। वह हीरे और रत्नों

का व्यापार करते थे। महेश लाल के वह दूर के रिश्ते में साढ़ू हुआ करते थे। पुराने ख्यालों के आदमी थे, इसलिए रोज प्रातःकाल गंगा स्नान करने जाया करते थे। दूध-दही के लिए गाय भी पाल रखी थी जिसकी अपने हाथों से सेवा सुश्रुषा किया करते थे।

महेश लाल को जब भी पैसों की आवश्यकता होती, वह गिरधारी लाल से बेहिचक मांग लिया करते थे* +। पस का मामला था, केवल एक चिट लिख कर भेजने भर की ही देर होती थी कि रुपया हाजिर हो जाता था। कभी किसी स्टॉप पेपर पर हैंडनोट लिखवाने की जरूरत नहीं पड़ी।

एक बार उर्मिला ने कहा-“एक मोटर गाड़ी भी होती तो कितना अच्छा होता।”

उसके कहने भर की देर थी कि महेशबाबू एक गाड़ी खरीदने के लिए एक लाख रुपये गिरधारी बाबू से मांग बैठे। पहले गिरधारीलाल ने थोड़ा विचार किया, फिर यह सोच कर रुपये देने के लिए राजी हो गए कि इतनी अधिक धन-संपत्ति है। भला उनका रुपया कहां डूबने वाला है!

मोटर गाड़ी में जब पति-पत्नी निकलते तो कई युवा दिलों में ऐसी ललक उठती। पर यह खुशी ज्यादा दिनों तक रही नहीं। सेठ गिरधारी लाल का एक तगादा आ पहुंचा। पर महेश ने उसको कोई महत्व नहीं दिया।

हार कर सेठजी को स्वयं आना पड़ा। महेश बाबू चौपड़ खेलने के लिए निकलने की तैयारी कर रहे थे। गिरधारी लाल ने कहा-“भाई साहब, मुझे एक आदमी को रुपया देना है, यदि आप मेरा हिसाब कर दें तो बहुत अच्छा हो।” और वह साथ लाए का-गजात खोलने लगे।



“इतनी भी जल्दी क्या है? इस समय क्षमा कीजिए, फिर कभी देख लूंगा।”

“जल्दी आपको नहीं, मुझे है। मुझे परसों वे रुपये देने बहुत जरूरी हैं।” महेश लाल की रुखाई से वह भीतर ही भीतर कुढ़ रहे थे।

“आपकी इतनी जल्दी मचाने से तो रुपये मैं दे नहीं सकता। हां, दो-तीन दिन बाद आइए तो देखते हैं। अभी मुझे थोड़ा दोस्तों के साथ चौपड़ खेलने जाना है।” कहते हुए महेश लाल निकलने लगे।

“ठीक है, मैं परसों आऊंगा। पूरा हिसाब हो जाना चाहिए।” गिरधारी लाल ने तिनक कर कहा। सेठजी रतनपुरा के एक सम्मानित व्यक्ति थे। वह महेश लाल के कुरुचिपूर्ण व्यवहार से जल गए। वह सोचने लगे कि मैं इनका महाजन हूं। धन-संपदा में इनसे बढ़ कर हूं। चाहूं तो ऐसों को मैं नौकर रख लूं। मैं इनके दरवाजे आऊं और इनका यह गुरूर! मैं जरूर इनका गुरूर तोड़ कर रहूंगा!

वादे के अनुसार तीसरे दिन सेठ अपने दो-तीन चमचों के साथ हाजिर हो गए। महेश लाल अपने घर पर ही थे। सेठ ने आते ही बड़ी रुखाई से अपना हिसाब दिखाया। कुल डेढ़ लाख रुपये मूल के तथा पच्चीस हजार सूद के।

महेश लाल के तो होश उड़ गए। उन्हें तो इस बात का गुमान ही नहीं था कि सेठ के इतने रुपये हो गए होंगे। उन्होंने बड़ी मुश्किल से गले के थूक को निगलते हुए कहा-“इतने रुपये तो मेरे पास नहीं हैं। मैं पंद्रह दिनों में व्यवस्था

कर के लौटा दूंगा।”

“नहीं, इतने दिन मैं इंतजार नहीं कर सकता। रुपये तो आपको आज और अभी ही देने होंगे।”

ऐसी बातें सुनकर महेश लाल को गुस्सा आ गया और उन्होंने क्रोध में भर कर उल्टा-सीधा कह कर सेठ को भगा दिया। सेठ भी भला कहां चूकने वाला था। जाते- जाते धमकी देता गया कि उसने उन्हें सड़क पर नहीं ला दिया तो उसका नाम भी गिरधारी लाल नहीं।

एक पखवाड़े के भीतर ही घर की कुर्की का आदेश कोर्ट से आ गया। पूरी संपत्ति कुर्की कर दी गई। नीलामी करके सेठ का रुपया चुकाया जाना था।

नीलामी हुई। पर वह भी पूरी नहीं उतरी। पूरी संपत्ति नीलाम होने पर भी पच्चीस हजार कम पड़ गए। कोर्ट ने अगला आदेश दिया कि यदि महेश लाल एक माह के भीतर पच्चीस हजार रुपये नहीं चुकाते हैं तो एक साल की कैद होगी, वह भी सश्रम।

यह खबर आग की तरह चारों फैल गई। उड़ते-उड़ते यह खबर महेश लाल की मां के पास भी पहुंच गई। मां का दिल रो उठा। उसे तो पहले से यह भय था कि बहू की बढ़ती फरमाइशें एक दिन ऐसा अवश्य करेंगी। पर वह वहां रह कर भी तो उसे रोक नहीं पाई थीं। फिर अब तो माया-मोह तोड़ कर भगवान की नगरी में चली आई हैं। अब क्या लेना-देना है। पर मां की ममता के आगे भगवान की भक्ति का जादू भी नहीं चल सकता है।

सेठ गिरधारी लाल सुबह में पूजा करने जा रहे थे। उस समय वह किसी से मिलना पसंद नहीं करते। तभी नौकर ने सूचना दी-“कोई संन्यासिनी आप से मिलने के लिए आई हैं।”

“कहां से आई हैं?”

“पता नहीं मालिक, उन्होंने अपना नाम पता बताने से इंकार कर दिया है। वे बस आप से ही मिलना चाहती हैं।”

पूजा छोड़ कर सेठजी बाहर आए। उस नारी को देख कर कुछ पल के लिए विस्मित हुए बिना न रह सके। वह अभी कुछ बोलते ही कि उस संन्यासिनी ने पच्चीस हजार रुपये के नोटों की गड़्डी सेठ के आगे फेंक दी।

किंकर्तव्यविमूढ़ सेठ हक्का-बक्का होकर देखते हुए बोले-
“माताजी, मैंने आपको पहचाना नहीं। आप कौन हैं?”

“मैं महेश लाल की मां हूं। मेरी बहू की फैशनपरस्ती ने मुझे वृंदावन पहुंचा दिया। मेरे बेटे को घर से निकाल कर सड़क पर पहुंचा दिया। यदि ये रुपये मेरे पास नहीं होते तो वह कल जेल की सलाखों के भीतर कैद भी हो सकता था। अब तो केवल एक ही दिन बचा है उसको रुपये लौटाने के लिए। मैं तो जानती हूं कि मेरा बेटा कैसा है।”

“पर आप को रुपये लाने की क्या जरूरत थी? आप इन रुपयों को रख लीजिए मैं अपना मुकदमा उठा लेता हूं। जैसी आप महेश की मां हैं, वैसी ही मेरी भी। मैं तो महेश की बीवी के उन कठोर शब्दों से घायल हो गया था जो उस दिन उसने मुझे सुनाए थे। वह औरत इतनी गिरी हुई है, जिसने अपने स्वार्थ के लिए अपनी माता समान सास का अपमान कर के वृंदावन भिजवा दिया, पति को कंगाल बना दिया तो मुझे भला गालियां देने से कहां चूकती।”



“नारी तो पुरुष की सच्ची शक्ति होती है। पर वह अपनी गरिमा नहीं समझे तो घर का तबाह होना कौन रोक सकेगा!” महेश की मां ने कहा।

“आप ठीक कहती हैं। पर क्या कीजिएगा? आप इन पैसों को रख लीजिए। मैं अपना मुकदमा वापस उठा लेता हूं।”

“नहीं बेटे, तुमने मुझे मां कहा है तो मेरा एक काम भी करो।”

“आप आज्ञा तो करें।”

“महेश को इन्हीं रुपयों से कोई दुकान करा दो। लेकिन उसे पता नहीं चले कि ये रुपये मैंने दिए हैं। तुम्हारा यह रुपया उस पर कर्ज रहेगा तभी उसका दिमाग खुलेगा।”

“ठीक है। मैं वैसा ही करूंगा।” सुनयना देवी ढेर सारा आशीर्वाद देती हुई वहां से पुनः वृंदावन लौट कर चली गई। किस्मत ने साथ दिया। महेश लाल की दुकान चल निकली। एक बार उसके पास फिर पैसे हो गए। सेठ गिरधारी लाल के उपकारों से वह अपने को आज भी दबे महसूस करते थे।

सेठ ने एक सीधे-साधे समारोह में महेश लाल को उस दुकान का मालिक बताते हुए बताया कि उसकी मां ने ही रुपये देकर उसके लिए दुकान कराई थी। उस दिन यह जान कर महेश लाल को बहुत दुख हुआ कि उसकी मां सुनयना देवी ने अपनी जीविका के लिए जमा किए गए पैसों को देकर सेठ गिरधारी लाल से यह दुकान कराई थी।

महेश लाल भले आज बहुत कुछ के मालिक बन गए थे, पर हृदय में हाहाकार मचा था। उनके मन में यह कचोट सर उठी रहा थी कि जो मां अपनी रोटी देकर भी बेटे की खुशी देखना चाहती थी, उसे उस पत्नी के लिए घर त्यागना पड़ा जिसने उसे कंगाल बना कर इज्जत को निलास दिया। वह मां को खोजते वृंदावन पहुंचे, लेकिन वह तो वृंदावन भी छोड़ कर कहीं और जा चुकी थीं। उसे अब कहां तलाशते आखिर सिर पीट कर रह गए?

— विनोद कुमार त्रिपाठी



उस सर्वव्यापक ईश्वर को योग द्वारा जान लेने
पर हृदय की अविद्यारूपी गांठ कट जाती है,
सभी प्रकार के संशय दूर हो जाते हैं

और

भविष्य में किये जा सकने वाले पाप कर्म
नष्ट हो जाते हैं अर्थात् ईश्वर को जान लेने
पर व्यक्ति भविष्य में पाप नहीं करता

काम करने से पहले सोचना बुद्धिमान्नी।

काम करते हुए सोचना सतर्कता

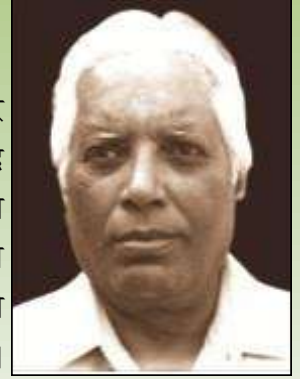
और काम करने के बाद सोचना

मूर्खता है

स्वामी दयानन्द सरस्वती



गुणाकर मुले



महाराष्ट्र के अमरावती जिले के सिंधु बुजुर्ग गाँव में 3 जनवरी 1935 को जन्में गुणाकर मूले एक गंभीर प्रतिभा के धनी व्यक्तित्व हैं। मराठी मूल के होने के बावजूद उन्होंने इलाहाबाद विश्वविद्यालय से गणित में एम. ए. किया और लेखन के लिए हिंदी व अंग्रेजी भाषाओं को माध्यम बनाया। गुणाकर मराठी भाषी थे, पर उन्होंने पचास साल से अधिक समय तक हिन्दी में लेखन किया और उनकी करीब 35 पुस्तकें छपीं। उन्होंने हिन्दी में करीब तीन हजार लेख लिखे और अंग्रेजी में उनके 250 से अधिक लेख हैं। वे एनसीईआरटी के पाठ्य पुस्तक संपादन मंडल व नेशनल बुक ट्रस्ट की हिंदी प्रकाशन सलाहकार समिति के सदस्य रह चुके हैं।

वर्षों तक दार्जीलिंग स्थित राहुल संग्रहागार से संबद्ध रहने के उपरांत 1971-72 के दौर में वे दिल्ली आ गए थे और फिर दिल्ली ही उनके जीवन का अंतिम पड़ाव बनी। यहीं उन्होंने विवाह किया, घर बसाया और रहे। एक दिलचस्प तथ्य यह भी है कि सिविल मैरिज के दौरान कोर्ट के सम्मुख मुले जी के पिता की भूमिका बाबा नागार्जुन ने निभाई थी। वे राहुल सांकृत्यायन के शिष्य थे। उनके परिवार में दो बेटियाँ, एक पुत्र तथा पत्नी हैं। 16 अक्टूबर 2009 को मियासथीनिया ग्रेविस नामक न्यूरो डिसार्डर के कारण मुले का पांडव नगर में देहावसान हो गया।

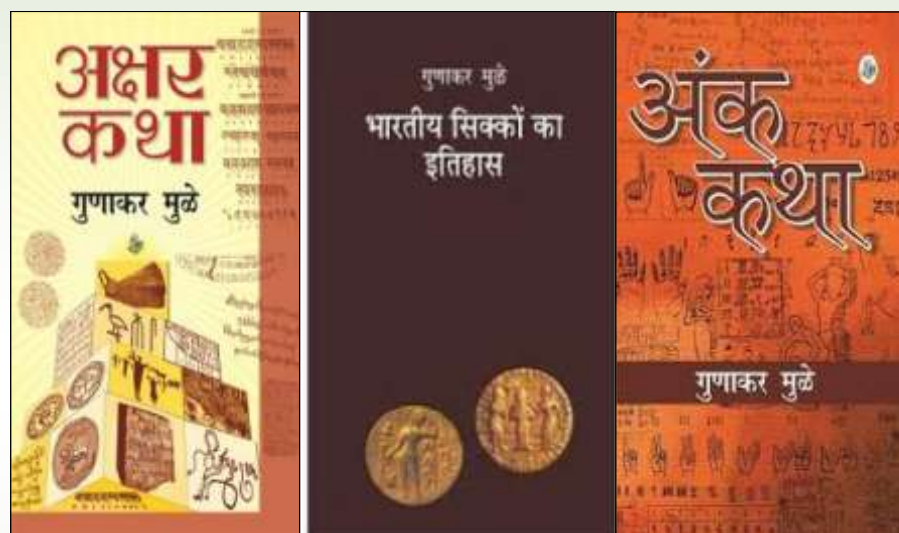
आकाश दर्शन, अंतरिक्ष यात्रा, नक्षत्रलोक कम्प्यूटर क्या है? भारतीय अंकपद्धति की कहानी, भारतीय विज्ञान की कहानी, आपेक्षिकता सिद्धान्त क्या है? संसार के महान गणितज्ञ, महान वैज्ञानिक केपलर, अक्षरों की कहानी, आंखों की कहानी, गणित की पहलियाँ, ज्यामिति की कहानी, लिपियों की कहानी आदि उनकी चर्चित रचनाएं हैं जो प्रायः पुस्तकालयों में मिलेंगी।

हिंदी में वैज्ञानिक साहित्य लिखने में गुणाकर जी का कोई मुकाबला नहीं था। हिंदी पाठकों के बीच वैज्ञानिक चेतना पैदा करने और वैज्ञानिक जानकारीयाँ उपलब्ध कराने के मामले उनका योगदान अतुलनीय है। हिंदी पाठकों के मानसिक और बौद्धिक स्तर को ऊंचा उठाने में उनकी महत्वपूर्ण भूमिका रही है। उन्हें हिंदी भाषी जनता का अगाध प्यार मिला। यही वजह है कि उनकी अधिकांश पुस्तकों के कई-कई संस्करण प्रकाशित हुए। इतिहास हो या संस्कृति, गणित हो या विज्ञान, पुरातत्व हो अथवा समाज विज्ञान, खगोल भौतिकी हो या भूगर्भ विज्ञान, नृविज्ञान हो अथवा जीवविज्ञान- हर विषय पर उनका अद्भुत अधिकार था। वह इन सभी विषयों के पंडित थे।

मुले जी का यह आग्रह रहता था कि उनके लेख में तनिक भी कलम न चलाई जाए। इस प्रश्न पर समझौता करने के लिए वह कतई तैयार नहीं होते थे। पत्र-पत्रिकाओं के संपादक इस मामले में विशेष रूप से सतर्क रहते थे। पर कभी-कभी इसका अपवाद भी हो जाता था। नई सहस्राब्दी के अवसर पर उनसे एक लेख लिखने का अनुरोध किया गया था। उन्होंने लेख दो खंडों में दिया था। संपादक ने एक जगह डरते-डरते एक मामूली-सा संशोधन कर दिया था- उनकी अनुमति लिए बिना। जब पत्रिका छपकर आई तो उन्होंने लेख को अच्छी तरह से पढ़ा और वह संशोधन भी उनकी नजरों से गुजरा। तत्काल उनका फोन आया और वे बोले- 'आपने मेरे लेख में संशोधन किया है। मैं स्वीकार करता हूँ कि यह चूक मुझसे ही हो गई थी और आपने बड़ी सावधानी से उसे संभाल लिया। मुझे बड़ी प्रसन्नता हुई। आपने मेरा लेख बिल्कुल

त्रुटिहीन छापा है। इसके लिए मैं आपको धन्यवाद देता हूँ।“ उनके इस वाक्य से संपादक को आश्चर्य हुआ वरना वे तो डर रहा थे कि कहीं वह संशोधन करने पर उन्हें डांट न पिला दें।

उनकी सादगी, सरलता, स्वाभिमान का कायल होना पड़ता है। हिंदी का एक फ्रीलांस लेखक होकर जीवनयापन करना कितना कठिन है, यह किसी से छिपा नहीं है। फिर विज्ञान जैसे शुष्क विषय पर लिखना तो और भी कठिन है, जिसके पाठक भी गिने-चुने ही होते हैं। पर यह काम मुले जी ने अपना आत्मसम्मान बचाते हुए पूरे उत्साह के साथ किया। यह कोई साधारण बात नहीं है। संघर्षशील होने के साथ-साथ वह परम स्वाभिमानी भी थे। उन्होंने न अपने जीवन में कोई समझौता किया और न लेखन में। उन्होंने ऐसे विषयों पर लिखा जिन पर आमतौर पर हिंदी में कोई लेखक नहीं मिलता। गणित और विज्ञान जैसे कठिन विषयों को सरलतम रूप में प्रस्तुत करने के लिए वह प्रतिबद्ध थे। पाठकों के बीच में उनकी लोकप्रियता का यह सबसे बड़ा कारण था।



ज्ञान के प्रति अनुराग और साधना उन्हें राहुल सांकृत्यायन से मिली थी। 1960 से उन्होंने गणित, विज्ञान, प्रौद्योगिकी, इतिहास, पुरातत्व, मुद्राशास्त्र तथा संस्कृति से संबंधित विविध विषयों पर लिखना शुरू किया। मातृभाषा मराठी होते हुए भी उन्होंने अपना लेखन अधिकतर हिंदी में और कभी-कभी अंग्रेजी में किया। पचास वर्षों में स्वतंत्र लेखन करते

हुए उन्होंने पुस्तकों तथा पत्र-पत्रिकाओं में प्रकाशित तथा दूरदर्शन के माध्यम से प्रसारित रचनाओं के रूप में ज्ञान-विज्ञान की विशाल संपदा हिंदी साहित्य को दी।

आकाश दर्शन, संसार के महान गणितज्ञ, भारतीय विज्ञान की कहानी, भारतीय अंक पद्धति की कहानी, प्राचीन भारत के महान वैज्ञानिक, ज्यामिति की कहानी, नक्षत्र-लोक, अंतरिक्ष-यात्रा, सौरमंडल, सूर्य, भास्कराचार्य, आर्यभट्ट, राहुल-चिंतन, भारतीय सिक्कों का इतिहास, हमारी राष्ट्रीय प्रयोगशालाएं आदि 40 के लगभग पुस्तकें तथा 4000 के करीब लेख उनके प्रकाशित हैं। संभवतः इससे अधिक सामग्री उनकी फाइलों तथा कंप्यूटर में सुरक्षित हैं। यह सारा काम उन्होंने स्वतंत्र लेखन से ही किया और कहीं नौकरी नहीं की।

वह एन.सी.ई.आर.टी., नेशनल बुक ट्रस्ट, सी.एस.आई.आर., भारतीय इतिहास अनुसंधान परिषद आदि से सलाहकार के रूप में जुड़े रहे तथा अनेक राष्ट्रीय पुरस्कारों से सम्मानित हुए। स्वभावतः अभावों से निरंतर संघर्ष करते हुए फक्कड़पन और मनमौजीपन में अपने जीवन को जीते हुए परम विश्राम को प्राप्त हुए।

— सुप्रिया राय

एल टी ई तकनीक

सूचना तकनीक के तेजी से प्रसार के साथ 4जी तकनीक ने कंप्यूटर की दुनिया को सुपर फ़ास्ट बना दिया है। 4 जी जिसे फ़ोर्थ जनरेशन या एलटीई यानि 'लॉन्ग टर्म एवोल्यूशन' भी कहते हैं, 2 जी तथा 3 जी के मुकाबले कई गुने अधिक फ़ास्ट ब्राउजिंग स्पीड देता है। जी का अर्थ जेनेरेशन होता है और यह उस पीढ़ी के टेक्नोलॉजिकल तथा साइंटिफिक विकास को दर्शाता है, जिससे यह संबंध रखता है। प्रत्येक जेनेरेशन के डिवाइस अपने से पूर्व जेनेरेशन से अधिक तेज, सुरक्षित तथा विश्वसनीय होते हैं। यह टेक्नोलॉजिकल डेवलपमेंट वायरलेस टेक्नोलॉजी से एनालॉग तथा पुनः डिजिटल टेक्निकल प्रगति के रूप में हो सकता है।



4 जी से 100 एमबीपीएस तक की ब्राउजिंग स्पीड की सुविधा प्राप्त होती है। जबकि 3 जी पर अधिकतम स्पीड 10 एमबीपीएस तक ही सीमित होती है। उदाहारण के लिए लिए 4जी एलटीई टेक्नोलॉजी यूजर को एक हाई डेफिनिशन फिल्म को डाउनलोड करने में अधिक से अधिक तीन मिनट से पांच मिनट समय लग सकता है जबकि उतनी ही डेफिनिशन के फिल्म को डाउनलोड करने में एक 3 जी यूजर को आधा घंटा से कम का समय नहीं लगता है। इसका कारण यही है कि 3 जी की स्पीड 10 एमबीपीएस से अधिक की नहीं होती है।

4 जी सूचना तकनीकी के युग का यह अन्य चमत्कार है जिसने कम्युनिकेशन के दुनिया को पूरी तरह से बदल दिया है। वैसे वर्तमान में इसकी सेवा चुनिन्दा महानगरों तक ही सीमित है लेकिन बड़ी जल्दी ही इसका प्रसार देश के अन्य क्षेत्रों में भी बड़ी जल्दी आ जाने की संभावना है। यह फ़ोर्थ जनरेशन सेवा के नाम से भी जाना जाता है। ऐसा माना जाता है कि 4 जी जैसे वायरलेस तकनीक के फंक्शनिंग के लिए न्यूनतम स्पीड तथा स्टैंडर्ड 100 मेगाबाइट्स से लेकर 1 गेगाबाइट्स प्रति सेकंड होनी चाहिए। इस के अंतर्गत डिजिटल ब्रॉडबैंड पैकेट पर बड़ी तेज स्पीड से आउटपुट मिलता है। वैसे वर्तमान में 4 जी की सेवा प्रदान करने वाली कंपनियां 100 एमबीपीएस तक की रेंज की सेवा ही प्रदान कर पाती हैं।

4 जी का उपयोग

सच पूछिये तो 4 जी एलटीई के यूजर की दुनिया आश्चर्यजनक रूप से बहुरंगी तथा बहुआयामी है। इसका उपयोग घर तथा ऑफिस दोनों के लिए विविध प्रकार की सेवाओं के लिए हो सकता है। अनलिमिटेड एंटरटेनमेंट सप्लायर के रूप में 4 जी एलटीई अत्याधुनिक सूचना तकनीक के रूप में बड़ी तेजी से अपनी पहचान बना रहा है।

इसके माध्यम से हम मूवीज, एचडी (हाई डेफिनिशन) विडियोज, ई-लर्निंग, एचडी कंटेंट समेत मल्टी-मीडिया तथा विविध प्रकार के एप्लीकेशनस को बड़ी तेजी से एक्सेस कर सकते हैं। 4 जी यूजर के द्वारा हैवी फाइल्स से लेकर हैवी डेफिनिशन मल्टी – मीडिया कंटेंट को आश्चर्यजनक रूप से बड़ी तेजी से डाउनलोड किया जा सकता है। इसके अतिरिक्त इस सर्विस के कारण एक यूजर को असीमित ऑनलाइन स्ट्रीमिंग, जीरो बफरिंग (मीडिया प्लेयर के द्वारा फाइल को बिना सेव किये चलाना) और फेस टू फेस विडियो चैटिंग की सुविधाएं उपलब्ध होती हैं।

4 जी एलटीई की अत्याधुनिक तकनीकी सुविधाएं प्राप्त करने के लिए किसी उपभोक्ता को नए सिम प्राप्त करने की आवश्यकता नहीं होती है। वैसे तो पुराने सिम पर 4 जी एलटीई की सुविधाएं एक्सेस नहीं हो पाती हैं, लेकिन किसी पुराने सिम पर 4 जी एलटीई की सुविधाएं प्राप्त करने के लिए इस सिम को 'यूनिवर्सल सब्सक्राइबर आइडेंटिफिकेशन मोड्यूल' में कन्वर्ट करने की आवश्यकता होती है। इसे शोर्ट में युसिम भी कहते हैं। युसिम वर्तमान सिम से बिलकुल अलग होता है



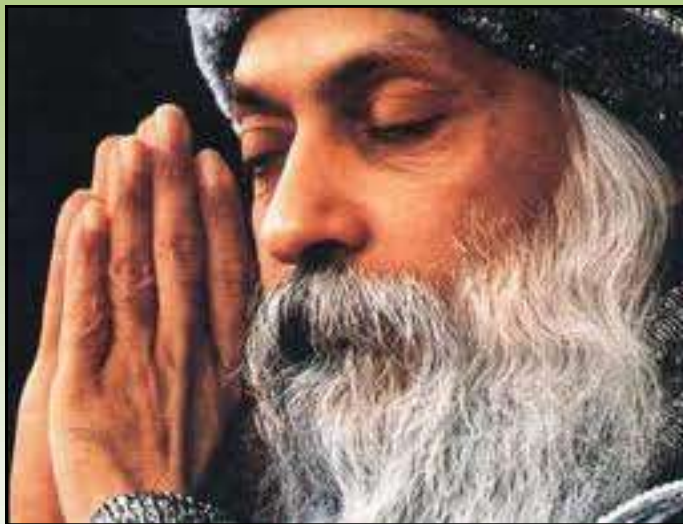
इसके अन्दर एक इंटीग्रेटेड सर्किट होता है, जिसके कारण इसमें यूजर की इंटरनेशनल मोबाइल सब्सक्राइबर आइडेंटिटी स्टोर होती है। साधारण सिम केवल 2 जी या 3 जी किसी स्पेसिफिक नेटवर्क को ही सपोर्ट करता है, जबकि युसिम 2 जी, 3 जी, तथा 4 जी सभी नेटवर्क्स को सपोर्ट करता है। एक नार्मल सिम की मेमोरी 64 केबी होती है, जबकि एक युसिम की मेमोरी 128 केबी की होती है।

भारत में फिलहाल 3 जी की सेवाएं बड़ी तेजी से अपना व्यापार कर रही हैं और यही कारण है कि सेलफोन तथा कंप्यूटर का बाजार 3 जी कनेक्टिविटी इनेबल्ड डिवाइसेज से भरा पड़ा है। 4 जी का एक्सेस अपेक्षाकृत धीमा है क्योंकि इसकी उपलब्धता चौथे जनरेशन की तकनीकी प्रगति पर आधारित है और यह तकनीक अभी तक पूरी तरह से विकसित नहीं हो पाया है।

वर्तमान में देश में 5 ही ऐसी कम्पनियां हैं जिन्हें कि 4 जी सर्विस ऑफर करने का लाइसेंस प्राप्त है। इसमें विडियोकान एक ऐसी कंपनी है जिसके पास 1800 मेगाहर्ट्ज फ्रीक्वेंसी बैंड पर एफडी एलटीई वर्शन सर्विस देने की क्षमता है। दूसरी शेष सर्विस प्रोवाइडर कम्पनियां जैसे एयरटेल, एयरसेल, रिलायंस जियो तथा एमटीएनएल सभी 2300 मेगाहर्ट्ज फ्रीक्वेंसी बैंड पर 4 जी सेवा देने में सक्षम हैं।

फिर भी जहाँ तक 4 जी उपकरणों का सवाल है तो ये अलग-अलग तरह एलटीई को सपोर्ट करते हैं। आईफोन 5 एस और 5 सी टीडी तथा एफडी दोनों को सपोर्ट करते हैं। लिहाजा यदि आप कोई 4 जी मोबाइल सेट या टेबलेट या लैपटॉप खरीद रहे हों तो इस बात को सुनिश्चित कर लें कि कहीं आपका वह डिवाइस केवल उसी नेटवर्क पर तो काम नहीं करता है जो भारत में उपलब्ध है। आने वाले दिनों में गहन रिसर्च के परिणामस्वरूप यह संभावना जताई जा रही है कि भारत में जल्दी ही ऐसे उपकरण मिलने शुरू हो जाएंगे जिन पर टीडी और एफडी दोनों प्रकार के नेटवर्क काम करेंगे।

भगवान रजनीश (ओशो)



चंद्र मोहन जैन का जन्म 11 दिसम्बर 1931 को भारत के मध्य प्रदेश राज्य के रायसेन शहर के कुच्चाडा गांव में हुआ था और वे 19 जनवरी 1990 तक इस धरती पर आचार्य रजनीश, भगवान श्री रजनीश, ओशो के रूप धर्मगुरु के रूप में लोगों को

संदेश देते रहे। ओशो का मूल नाम चन्द्र मोहन जैन था। वे अपने पिता की ग्यारह संतानों में सबसे बड़े थे। उनके माता पिता श्री बाबूलाल और सरस्वती जैन, जो कि तारणपंथी दिगंबर जैन थे, ने उन्हें अपने ननिहाल में सात वर्ष की उम्र तक रखा था। ओशो के स्वयं के अनुसार उनके विकास में इसका प्रमुख योगदान रहा क्योंकि उनकी नानी ने उन्हें संपूर्ण स्वतंत्रता, उन्मुक्तता तथा रुढ़िवादी शिक्षाओं से दूर रखा। जब वे सात वर्ष के थे तब उनके नाना का निधन हो गया और वे गाडरवारा अपने माता पिता के साथ रहने चले गए।

रजनीश बचपन से ही गंभीर व सरल स्वभाव के थे, गाडरवारा में उनके जीवन काल के शरारती दिन बीते। वे शासकीय आदर्श उच्चतर माध्यमिक विद्यालय में पढा करते थे, आज भी उस विद्यालय में उनकी सीट विद्यमान है जिस पर रजनीश बैठा करते थे आज भी उस विद्यालय में विदेशी दर्शनार्थी आते हैं, जो वहां अत्यंत शांति का अनुभव करते हैं। आदर्श विद्यालय की अपनी एक गरिमा है और हो भी क्यों न? जिस विद्यालय ने भगवान ओशो को शिक्षा दीक्षा दी है।

ओशो एक भारतीय विचारक थे और रजनीश आंदोलन के प्रणेता-नेता थे। अपने जीवनकाल के दौरान उन्हें विवादास्पद रहस्यदर्शी, गुरु और आध्यात्मिक शिक्षक के रूप में देखा गया। फिर भी ओशो के रूप में ही इनकी ख्याति सर्वाधिक है। ओशो शब्द 'ओशनिक' अनुभव का वर्णन करता है, वे कहते हैं, लेकिन अनुभवकर्ता के बारे में क्या? इसके लिए हम 'ओशो' शब्द का प्रयोग करते हैं। अर्थात्, ओशो मतलब- 'सागर से एक हो जाने का अनुभव करने वाला'। 60 के दशक में उन्होंने पूरे भारत में एक सार्वजनिक वक्ता के रूप में यात्रा की और वे समाजवाद, महात्मा गाँधी और हिंदू धार्मिक रुढ़िवादी के प्रखर आलोचक रहे। उन्होंने धार्मिक मान्यताओं पर गहरा कुठाराघात किया है और यह बताया है कि मन की शांति कर्मकाण्ड से नहीं बल्कि ध्यान से प्राप्त की जा सकती है। यद्यपि सबलोग तो ध्यान नहीं कर सकते पर जो कर सकते हैं उनके लिए उनका विचार अत्यंत महत्वपूर्ण है।

वे एक आध्यात्मिक गुरु थे, तथा भारत व विदेशों में जाकर उन्होंने प्रवचन दिये। वे दर्शनशास्त्र के अध्यापक थे। पहले वे 'आचार्य रजनीश' के नाम से 80 के दशक में भगवान श्री रजनीश नाम से और ओशो 89 के समय से जाने गये। 1974 में पूना आने के बाद उन्होंने अपने आश्रम की स्थापना की जिसके बाद विदेशियों की संख्या बढ़ने लगी। 1980 में ओशो अमेरिका चले गए और वहां सन्यासियों ने रजनीशपुरम की स्थापना की।

ओशो के विचार

वह व्यक्ति जो स्वस्थ, निर्भर, निर्बोझ, ताजा, युवा, कुंआरा अनुभव करता है, वही समझ पाएगा कि संतोष क्या है। अन्यथा तो तुम कभी न समझ पाओगे कि संतोष क्या होता है-यह केवल एक शब्द बना रहेगा। संतोष का अर्थ है: जो कुछ है सुंदर है; यह अनुभूति कि जो कुछ भी है श्रेष्ठतम है, इससे बेहतर संभव नहीं। एक गहन स्वीकार की अनुभूति है संतोष; संपूर्ण अस्तित्व जैसा है उस के प्रति 'हां' कहने की अनुभूति है संतोष।

साधारणतया मन कहता है, 'कुछ भी ठीक नहीं है।' साधारणतया मन खोजता ही रहता है शिकायतें- 'यह गलत है, वह गलत है।' साधारणतया मन इनकार करता है: वह 'न' कहने वाला होता है, वह 'नहीं' सरलता से कह देता है। मन के लिए 'हां' कहना बड़ा कठिन है, क्योंकि जब तुम 'हां' कहते हो, तो मन ठहर जाता है; तब मन की कोई जरूरत नहीं होती। क्या तुमने ध्यान दिया है इस बात पर? जब तुम 'नहीं' कहते हो, तो मन आगे और आगे सोच सकता है; क्योंकि 'नहीं' पर अंत नहीं होता। नहीं के आगे कोई पूर्ण-विराम नहीं है; वह तो एक शुरुआत है। 'नहीं' एक शुरुआत है; 'हां' अंत है। जब तुम 'हां' कहते हो, तो एक पूर्ण विराम आ जाता है; अब मन के पास सोचने के लिए कुछ नहीं रहता, बड़बड़ाने-कुनमुनाने के लिए, खीझने के लिए, शिकायत करने के लिए कुछ नहीं रहता- कुछ भी नहीं रहता।



जब तुम 'हां' कहते हो, तो मन ठहर जाता है; और मन का वह ठहरना ही संतोष है। संतोष कोई सांत्वना नहीं है- यह स्मरण रहे। मैंने बहुत से लोग देखे हैं जो सोचते हैं कि वे संतुष्ट हैं, क्योंकि वे तसल्ली दे रहे हैं स्वयं को। नहीं, संतोष सांत्वना नहीं है, सांत्वना एक खोटा सिक्का है।

जब तुम सांत्वना देते हो स्वयं को, तो तुम संतुष्ट नहीं होते। वस्तुतः भीतर बहुत गहरा असंतोष होता है। लेकिन यह समझ कर कि असंतोष चिंता निर्मित करता है, यह समझ कर कि असंतोष परेशानी खड़ी करता है, यह समझ कर कि असंतोष से कुछ हल तो होता नहीं-बौद्धिक रूप से तुमने समझा-बुझा लिया होता है अपने को कि 'यह कोई ढंग नहीं है।' तो तुमने एक झूठा संतोष ओढ़ लिया होता है स्वयं पर; तुम कहते रहते हो, 'मैं संतुष्ट हूं। मैं सिंहासनो के पीछे नहीं भागता; मैं धन के लिए नहीं लालायित होता; मैं किसी बात की आकांक्षा नहीं करता।' लेकिन तुम आकांक्षा करते हो। अन्यथा यह आकांक्षा न करने की बात कहां से आती?

तुम कामना करते हो, तुम आकांक्षा करते हो, लेकिन तुमने जान लिया है कि करीब-करीब असंभव ही है पहुंच पाना; तो तुम चालाकी करते हो, तुम होशियारी करते हो। तुम स्वयं से कहते हो, 'असंभव है पहुंच पाना।' भीतर तुम जानते हो: असंभव है पहुंच पाना, लेकिन तुम हारना नहीं चाहते, तुम नपुंसक नहीं अनुभव करना चाहते, तुम दीन-हीन नहीं अनुभव करना चाहते, तो तुम कहते हो, 'मैं चाहता ही नहीं।' तुमने सुनी होगी एक बहुत सुंदर कहानी।

एक लोमड़ी एक बगीचे में जाती है। वह ऊपर देखती है: अंगूरों के सुंदर गुच्छे लटक रहे हैं। वह कूदती है, लेकिन उसकी छलांग पर्याप्त नहीं है। वह पहुंच नहीं पाती। वह बहुत कोशिश करती है, लेकिन वह पहुंच नहीं पाती। फिर वह चारों ओर देखती है कि किसी ने उसकी हार देखी तो नहीं। फिर वह अकड़ कर चल पड़ती है। एक नन्हा खरगोश जो झाड़ी में

छिपा हुआ था बाहर आता है और पूछता है, 'मौसी, क्या हुआ?' उसने देख लिया कि लोमड़ी हार गई, वह पहुंच नहीं पाई। लेकिन लोमड़ी कहती है, कुछ नहीं अंगूर खट्टे हैं।

अंधेरा कितना ही हो, चिंता न करो। अंधेरे का कोई अस्तित्व ही नहीं होता। अंधेरा कम और ज्यादा थोड़े ही होता है; पुराना-नया थोड़े ही होता है। हजार साल पुराना अंधेरा भी, अभी दीया जलाओ और मिट जाएगा। और घड़ी भर पुराना अंधेरा भी, अभी दीया जलाओ और मिट जाएगा। अंधेरा अमावस की रात का हो तो मिट जाएगा। और अंधेरा साधारण हो तो मिट जाएगा। अंधेरे का कोई बल नहीं होता।

अंधेरा दिखाई बहुत पड़ता है, मगर बहुत निर्बल है, बहुत नपुंसक है। ज्योति बड़ी छोटी होती है, लेकिन बड़ी शक्तिशाली है। क्योंकि ज्योति परमात्मा का अंश है; ज्योति में परमात्मा स्थित है। अंधेरा तो सिर्फ नकार है, अभाव है। अंधेरा है नहीं। इसीलिए तो अंधेरे के साथ तुम सीधा कुछ करना चाहो तो नहीं कर सकते। न तो अंधेरा ला सकते हो, न हटा सकते हो। दीया जला लो, अंधेरा चला गया। दीया बुझा दो, अंधेरा आ गया। सच तो यह है कहना कि अंधेरा आ गया, चला गया-ठीक नहीं; भाषा की भूल है। अंधेरा न तो है, न आ सकता, न जा सकता। जब रोशनी नहीं होती है तो उसके अभाव का नाम अंधेरा है। जब रोशनी होती है तो उसके भाव का नाम अंधेरे का न होना है। अंधेरा कितना ही हो और कितना ही पुराना हो, कुछ भेद नहीं पड़ता।

जो दीया हम ला रहे हैं, जो रोशनी हम जला रहे हैं, वह इस अंधेरे को तोड़ देगी; तोड़ ही देगी। बस रोशनी जलने की बात है। इसलिए अंधेरे की चिंता न लो। रोशनी के लिए ईंधन बनो। इस प्रकाश के लिए तुम्हारा स्नेह चाहिए। स्नेह के दो अर्थ होते हैं: एक तो प्रेम और एक तेल। दोनों अर्थों में तुम्हारा स्नेह चाहिए-प्रेम के अर्थों में और तेल के अर्थों में-ताकि यह मशाल जले।

अंधेरे की बिल्कुल चिंता न लो। अंधेरे का क्या भय! सारी चिंता, सारी जीवन-उर्जा प्रकाश के बनाने में नियोजित कर देनी है। और प्रकाश तुम्हारे भीतर है, कहीं बाहर से लाना नहीं है। सिर्फ छिपा पड़ा है, उघाड़ना है। सिर्फ दबा पड़ा है, थोड़ा कूड़ा-कर्कट हटाना है। मिट्टी में हीरा खो गया है, जरा तलाशना है। और तूने कहा: 'प्रकाश के दुश्मन भी बहुत हैं।' सदा से हैं। कोई नयी बात नहीं।

मगर क्या कर पाए प्रकाश के दुश्मन? प्रकाश के दुश्मन खुद दुःख पाते हैं-और क्या कर पाते हैं! जिन्होंने सुकरात को जहर दिया, तुम सोचते हो सुकरात को दुखी कर पाए? नहीं, असंभव! खुद ही दुःखी हुए, खुद ही पश्चाताप से भरे, खुद ही पीड़ित हुए। सुकरात को सूली की सजा देने के बाद न्यायाधीश सोचते थे कि सुकरात क्षमा मांग लेगा। क्षमा मांग लेगा तो हम क्षमा कर देंगे। क्योंकि यह आदमी तो प्यारा था; चाहे कितना बगावती हो, इस आदमी की गरिमा तो थी। असल में सुकरात जिस दिन बुझ जाएगा, उस दिन एथेंस का दीया भी बुझ जाएगा-यह भी उन्हें पता था। सुकरात की मौत के बाद एथेंस फिर कभी ऊंचाइयां नहीं पा सका। आज क्या है एथेंस की हैसियत?

आज एथेंस की कोई हैसियत नहीं है। इन ढाई हजार सालों में सुकरात के बाद एथेंस ने फिर कभी गौरव नहीं पाया; कभी फिर स्वर्ण नहीं चढ़ा एथेंस पर। और सुकरात के समय में एथेंस विश्व की बुद्धिमत्ता की राजधानी थी। विश्व की श्रेष्ठतम प्रतिभा का प्राकट्य वहां हुआ था। एथेंस साधारण नगर नहीं था, जब सुकरात जिंदा था। सुकरात की ज्योति से ज्योतिर्मय था, जगमग था। इसलिए अंधेरे से डरने की जरूरत नहीं है।

मोर और मोरपंख



मोर भारत का राष्ट्रीय पक्षी है। रूप और गुण दोनों में मोर अतुलनीय है। मोर बहुत सुन्दर होता है। इसके पंखों में इन्द्रधनुषी रंग बिखरे हुए हैं। बरसात के मौसम में बादलों को देखकर पक्षी राज मोर झूम उठता है। अपने पंखों को फैलाकर जब यह नाचता है तो मोरनी के साथ साथ सभी इसके नृत्य के दीवाने हो जाते हैं।

आयुर्वेद में मोरपंखों का प्रयोग दवा के रूप में किया जाता है। मोर के नृत्य की नकल करके मोरनृत्य नामक नृत्य किया जाता है। जिसमें नर्तक मोरपंख लगाकर उसकी तरह नाचते हैं। राष्ट्रीय पक्षी एवं पक्षी राज होने

के कारण मोर की रक्षा करना हमारा कर्तव्य है।

मोर की ऊंचाई लगभग डेढ़ दो फुट होती है मगर इसका शरीर कुछ बड़ा होता है। वास्तव में अपने लम्बे लम्बे पंखों के कारण यह काफी लम्बा लगता है। नाचते वक्त यह अपने पंख गोल घेरे में ऊपर उठा कर फैला लेता है। मोर के सिर पर एक चमकीली रंग बिरंगी कलगी होती है। इसकी चोंच थोड़ी लम्बी और नुकीली होती है। मोर के पैर उसकी तरह सुन्दर नहीं होते। किस्से कहानियों में कहा जाता है हि मोर अपने पैरों को देखकर रोता है। मोरनी मोर की तरह सुन्दर नहीं होती, क्योंकि उसके पंख मोर जैसे सुन्दर नहीं होते। मोर हरे भरे जंगलों और खेतों के पास ही रहते हैं। मोर का प्रिय भोजन है कीट पतंग और अनाज के दाने। मोर सांप को भी मार कर खा जाता है। पतली टांगें और भारी शरीर के कारण मोर अधिक उड़ नहीं सकते। जरूरत पड़ने पर यह तेज भाग सकते हैं।

हमारे देश में मोर को पवित्र माना जाता है। भगवान कृष्ण अपने मुकुट में मोरपंख लगाते थे। मोरपंख के पंखे भी बनाये जाते हैं जो सजावट के काम आते हैं। मंदिरों में भी मोरपंख रखे जाते हैं। मोर कार्तिकेय भगवान का वाहन है एवं मां सरस्वती का प्रिय पक्षी है। भगवान श्रीकृष्ण का अपने मुकुट पर मोर पंख को स्थान देना, इन्द्र देव का मोर पंख के सिंहासन पर बैठना, पौराणिक काल में महर्षियों का मोर पंख की कलम से बड़े-बड़े ग्रंथ लिखना- ये कुछ ऐसे उदाहरण हैं जो मोर पंख की उपयोगिता को बयां करते हैं। समस्त शास्त्रों, ग्रंथों, वास्तु और ज्योतिष शास्त्रों में भी मोर के पंख को अहम स्थान दिया गया है। आगे की स्लाइड्स पर क्लिक करें और जानें किस तरह मोर पंख को घर में रखने के पीछे ना सिर्फ धार्मिक महत्व है बल्कि इससे घर की सुख-समृद्धि में भी बढ़ोतरी होती है-

मोर पंख को घर में किसी ऐसी जगह पर रखना चाहिए जहां से वो आसानी से दिखायी देता रहे। ऐसा इसलिए क्योंकि मोर पंख घर में मौजूद नकारात्मक शक्तियों को नष्ट कर सकारात्मक ऊर्जा यानी पॉजिटिव एनर्जी का संचार करता है।

चमत्कारी औषधि शतावरी

शतावरी एक चमत्कारी औषधि है जिसका उपयोग कई रोगों के इलाज में किया जाता है। शतावरी एक खूबसूरत लता के रूप में घरों और बंगलों में भी लगाई जाती है। यह पौधा झाड़ीनुमा होता है, जिसमें फूल मंजरियों में एक से दो इंच लम्बे एक या गुच्छे में लगे होते हैं और फल मटर के समान पकने पर लाल रंग के होते हैं। इसके पत्ते हरे रंग के धागे जैसे सोया सब्जी की तरह खूबसूरत, जड़ों में सैकड़ों की संख्या में हरी भूरी जड़ें जो इसका प्रमुख गुणकारी अंग है। इन जड़ों को ही ऊपर का पतला छिलका उतार सुखा कर औषधि रूप में प्रयोग करते हैं।

आयुर्वेद के आचार्यों के अनुसार, शतावर पुराने से पुराने रोगी के शरीर को रोगों से लड़ने की क्षमता प्रदान करता है। इसे शुक्रजनन, शीतल, मधुर एवं दिव्य रसायन माना गया है। महर्षि चरक ने भी शतावर को चिर यौवन को बरकार रखने वाला माना है। आधुनिक शोध भी शतावरी की जड़ को हृदय रोगों में प्रभावी मान चुके हैं।

शतावरी गुणों में भारी, शीतल, स्वाद में कड़वी व मधुर, रसायन गुणों से भरपूर वायु और पित्त नाशक, पुरुषों में शक्ति, ओज वीर्यवर्धक, स्त्रियों के स्तनों में दूध बढ़ाने वाली, नेत्र ज्योति, स्मृति, पाचक अग्नि, बुद्धि बढ़ाने वाली, अतिसार, गुल्म, स्नायु रोग नाशक, स्निग्ध, कामोद्दीपक, यकृत, गुर्दे की बीमारियों में लाभदायक है। यह पौष्टिक, कृशता मिटाने वाली, वृद्धावस्था रोकने वाली, रक्त पित्त व अम्ल पित्त, शरीर की ऊष्मा व जलन को मिटाती है। वायु नष्ट करती है। शतावरी की जड़ को छीलकर यों ही चबाकर खाया जा सकता है। इसका रस निकाल कर पीना भी शक्तिवर्धक है। इसको सुखाकर उसका चूर्ण लड्डू, पाक, घृत, तेल तथा अनेक मिश्रित योग बनाये जाते हैं जो सारे देश में वैद्य और हकीम अपने रोगियों को सेवन कराते हैं। इसका विभिन्न रोगों में निम्नानुसार प्रयोग किया जाता है।

शतावरी के उपयोग-

नींद न आने की समस्या :-यदि आप नींद न आने की समस्या से होने वाली परेशानी को शतावरी की जड़ के चूर्ण रूप में लेकर और थोड़ा गाय का घी डालकर सेवन करने से अनिद्रा की समस्या दूर हो जाती है। तनाव से मुक्त होकर अच्छी नींद लाने में यह सहायक है।

माइग्रेन :-

शतावरी की ताज़ी जड़ को कूटकर व इसका रस निकालकर इसमें बराबर मात्रा में तिल का तेल मिलाकर पकाकर मालिश का तेल तैयार कर सर पर लगाने से माइग्रेन जैसे सिरदर्द में लाभ मिलता है।

प्रदर रोग :-

सुबह-शाम शतावरी चूर्ण 5 ग्राम से 10 ग्राम की मात्रा में थोड़े से शुद्ध घी में मिलाकर चाटने व कुनकुना गर्म मीठा दूध पीने से प्रदर रोग से जल्दी से छुटकारा मिलता है।

प्रसूता स्त्रियों में दूध न आने की समस्या-

प्रसूता स्त्रियों में दूध न आने की समस्या होने पर शतावरी का चूर्ण -पांच ग्राम गाय के दूध के साथ देने से लाभ मिलता है। गाँव के लोग इसकी जड़ का प्रयोग गाय या भैंसों को खिलाते हैं, तो उनकी दूध न आने की समस्या में लाभ मिलता पाया गया है। अतः इसके ऐसे ही प्रभाव प्रसूता स्त्रियों में भी देखे गए हैं। यदि खाँसी हो तो शतावरी चूर्ण, और मिश्री समान मात्रा में कूट-पीसकर मिलाकर एक गिलास पानी में उबालकर काढ़ा बनाकर पीने से इससे सूखी खाँसी में आराम होता है।

— नितेश कुमार

वृक्ष

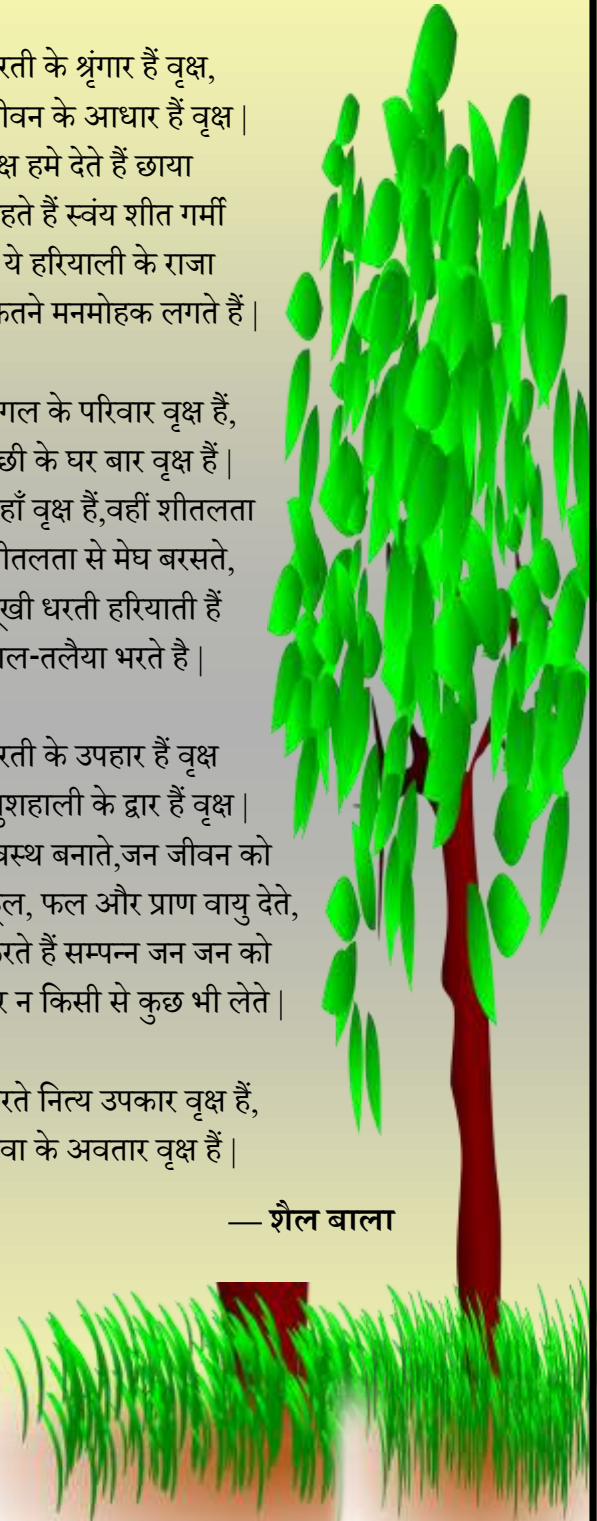
धरती के श्रृंगार हैं वृक्ष,
जीवन के आधार हैं वृक्ष |
वृक्ष हमे देते हैं छाया
सहते हैं स्वंय शीत गर्मी
हैं ये हरियाली के राजा
कितने मनमोहक लगते हैं |

जंगल के परिवार वृक्ष हैं,
पंछी के घर बार वृक्ष हैं |
जहाँ वृक्ष हैं, वहीं शीतलता
शीतलता से मेघ बरसते,
सूखी धरती हरियाती हैं
ताल-तलैया भरते हैं |

धरती के उपहार हैं वृक्ष
खुशहाली के द्वार हैं वृक्ष |
स्वस्थ बनाते, जन जीवन को
फूल, फल और प्राण वायु देते,
करते हैं सम्पन्न जन जन को
पर न किसी से कुछ भी लेते |

करते नित्य उपकार वृक्ष हैं,
सेवा के अवतार वृक्ष हैं |

— शैल बाला



पानी

करो मत मुझको बर्बाद,
इतना तो रखो तुम याद,
रह जाओगे प्यासे ही तुम,
मेरे बिना न जी पाओगे।

आखिर कब तक बर्बादी का,
तुम तमाशा देखोगे,
प्रलय आएगा जब,
तब मेरे बारे में सोचोगे।

इस संसार में मेरे बिना जीवन अधूरा है,
मेरी बर्बादी के कारण, हर जश्न फीका है।

ऐसा न हो इक दिन आये ऐसा
मैं दुनिया से चला जाऊँ,
खत्म हो जाए खेल मेरा,
लौट के शायद न वापस आऊँ।

रोने के अलावे तुम,
कुछ नहीं कर पाओगे ,
सोचो अब तो करो फैसला,
क्या मुझे संजोयोगे ।

दुनिया में मेरे बिना, जीना सबका मुश्किल है,
न रहूँ अगर मैं, कल क्या होगा इस पर बोलो।

मुझे पीकर सभी जीव,
अपनी प्यास बुझाते हैं,
कमी पड़ गई अगर तो,
हर तरफ सूखे पड़ जाते हैं।

— शैल बाला

परिणति

एक वक्त था, सेठ अमीरचंद अपने बहुत बड़े व्यवसाय के कारण अपने बेटे दीपक को समय नहीं दे पा रहे थे। अतः बेटे को अच्छी शिक्षा भी मिल जाये और व्यवसाय में व्यवधान भी उत्पन्न न हो इसलिए दूर शहर के बोर्डिंग स्कूल में दाखिला करवा दिया। स्कूल में जब छुट्टियाँ पड़तीं तो वह नौकर भेज कर बेटे को घर बुला लाते। छुट्टियाँ बीत जातीं तो स्कूल खुलते ही फिर बेटे को बोर्डिंग स्कूल भेज दिया जाता। वक्त बदला, अब दीपक पढ़-लिख कर बहुत बड़ा व्यवसायी बन गया और सेठ बूढ़ा हो गया। सेठ का बेटे पर बड़ा कर्ज था। उसे अच्छे स्कूल में जो पढ़ाया – लिखाया था। सेठ का सारा कारोबार बेटे ने खूब फैलाया। कारोबार में अति व्यस्तता के कारण अब बेटे के पास भी बूढ़े बाप के लिए समय नहीं था। अतः अब वह भी बाप को शहर के बढ़िया वृद्धाश्रम में छोड़ आया और फुर्सत में सेठ को घर ले जाने का वायदा कर वापिस अपने व्यवसाय में रम गया। वृद्धाश्रम का मोटा खर्च अदा कर अब वह स्वयं को कर्जमुक्त महसूस कर रहा था। शायद यही सेठ की परिणति थी।

मातृधर्म

अपने पिल्लों के साथ एक कुतिया नाली के बगल में पड़े कूड़े के ढेर पर अपने तथा पिल्लों के लिए रोटी तलाश रही थी। रात भारी बर्फवारी हुई थी। कूड़े का ढेर बर्फ में दब गया था। कुतिया अपने पिल्लों को लेकर कमरे के सामने बन रहे नये मकान में आ गई। मकान के एक कमरे में सीमेंट की खाली बोरियां पड़ी थीं। उसने वहीं अपना डेरा जमा लिया था। दिन जैसे – जैसे चढ़ने लगा भूखी कुतिया के स्तनों को भूखे पिल्ले चूस – चूस कर बुरा हाल करने लगे शायद स्तनों से निकलता दूध उनके लिए पर्याप्त नहीं था।

भूखे पिल्लों की चूं – चूं की आवाजें मेरे कमरे तक आ रही थीं। मैंने जब यह दृश्य देखा तो रात की बची रोटियां लेकर उस कमरे की ओर चल दिया। मैं खिड़की से यह सब देखे जा रहा था। जैसे ही मैं वहाँ पहुँचा कुतिया जोर जोर से भौंकने लगी। ऐसे लगा मानो वह मुझ पर टूट पड़ेगी। तभी मैंने उसे प्यार से पुचकारा और रोटियां तोड़कर उसके मुँह के आगे डाल दीं। अब कुतिया आश्चर्य हो गई थी कि उसके बच्चों को कोई खतरा नहीं है।

कुतिया ने रोटी सूंधी और एक तरफ खड़ी हो गई। भूखे पिल्ले रोटी पर टूट पड़े। कुतिया पास खड़ी अपने पिल्लों को रोटी खाते देखे जा रही थी। सारी रोटी पिल्ले चट कर गये। भूखी कुतिया ने एक भी टुकड़ा नहीं उठाया। मातृत्व के इस दृश्य को देख कर मेरा हृदय द्रवित हो उठा और इस मातृधर्म के आगे मेरा मस्तक स्वतः नत हो गया।



— मानसिंह मारडी

मालदा मंडल के अंतर्गत आने वाले ऐतिहासिक एवं पर्यटन की दृष्टि से
महत्वपूर्ण स्थल मुंगेर के कुछ दृश्य



**मंडल कार्यालय मालदा में आयोजित महिला कार्मिक हिंदी कार्यशाला एवं
हिंदी आन लाइन श्रुतलेखन कंप्यूटर कार्यशाला के कुछ दृष्य**

